

2715

१३ नमो श्रीवर्गसत्त्वाय नमः ॥ गुर्वृत्तानमः ॥ ॥ धनसग्वन्य
वसत्त्वा नमः सावना ॥ धूप ॥ रगवन श्रीवैशेषो वा नमः ॥
मत्स्यादि ॥ कवसगलं रक्तया ॥ सावना ॥ उवकां मृगादकथे ॥

१३ नमो श्रीवर्गसत्त्वाय ॥ गुर्वृत्तानमः ॥ धनसग्वन्य कलसम
त्त्वा नमः सावना ॥ धूप ॥ रगवन श्रीसर्वविश्वानाम नमः ॥
दि ॥ कवसगलं रक्तया ॥ सावना ॥ उवकां मृगादकथे ॥ उवकां
२ महाकथं स्वाहा मधुकिशिकुननूयं विज्ञावा ॥ नदन स्वस्वविकु
पविनामून स्वस्वदवगाचक्रविविक्त स्वद्वीकमयूषां कनशि
ज्ञानवक्रं दृष्ट्वा मयस्वपुवरा मरुवागलद्वारयवा विवि

रुद्रासुतकं चिकथक ॥ चिंक्रसमयदवता स्तनदवगथाचिकिरु
 कं चिकथक ॥ आकथन ॥ धृपनित्ता ऊन ॥ ३ आखरु नाहवर्जसत्त्व
 स्पसर्वपायविप्रमानरुत्तिंकुनुइरुट ॥ शुवायका ॥ ३ आखरु
 नाहवर्जसत्त्व स्पसर्वकले ॥ गिनानिंकुनुइरुट ॥ स्वानरंखा ॥ ३
 आखरु नाहवर्जसत्त्व स्पसर्वविबानपनयइरुट ॥ कथमया
 ३ आखरु नाहवर्जसत्त्व स्पसर्वपृथ्वीलनसंता लानरक्षाकथइ

प.केशा

रुट ॥ किम्बद ॥ ३ अका वासुखयादि ॥ वलिवय ॥ ३ लव २ सहु
 नरुट्टियवलिविभधयइरुट ॥ स्वाहा ॥ पायादि ॥ यथान्याग
 यचायहालयजावत्ता ॥ यथं वादलुगिकथयता ॥ जापा ॥ वलिधूय
 दिया ॥ ३ निकल ॥ चैलविधि ॥ ॥ यनअग्निवतुसक्ता
 नअविद्यनयाय ॥ ३ वर्जसत्त्वा ॥ ३ ॥ यनकुसथायना ॥
 रुका ॥ ३ ममहाक ॥ ॥ दिव्या ॥ प्रविगावुं अदवगावूधधर्मसंघनः

२

ताः पृथिवि आकाश दला गुणाः सर्वविघ्नान्निनः कं कर्षन्नुस्वस्ति
 स्वाहा ॥ धनं हा मसि मन ॥ स्वस्ति वाक्पुत्र अग्नि मूय नायाय चवन
 नुधर्मं जलन दीपदीया विखा विख महाप्रयह्य कय वाहनाय
 दानयन अमृकस्य अमृकनिमित्तार्थं अग्निथापन कूल जानरुहं
 ॥ ॥ हा मसावना ॥ मृग कविता अग्नि मध्वयका नजं यम
 मान गदूपनि वंजा जं इग्नि मधुल नुका वा रुवा पी नवधूमक

मखं च उरु जं वाम दयुक मधु नुधनं सर्ववदार्क मानाधनं
 पिता म्वला गवन यज्ञाय विक्तिनं किन गं जटा मकूट धानि संव
 र्जस स्वा आल क क मो विनं मम याग्निं विरावा ॥ ॥ अहि महाः
 रुगाद वषिदि कृशा रुम गृहि स्वा इकि महानस्मि सन्निहिना
 गव स्वाहा ॥ ॥ अः ॥ गक्ति ४४ हं ३ गक्ति नाजहा ॥ वडा कृ ॥ मदि सि

॥ निबोकेन ॥ अग्नेदीपदिवा विषा विषमहा प्रयहवक
 वावाहनाय दध्म ॥ ६ ॥ वेहो ॥ समयत्त्ववक गगना ॥ समयाः
 निविशाव ॥ ६ ॥ स्वरमुवाहपां कृमसंप्रति च स्वाहा ॥ मंत्रवर्त
 नहाय ॥ ६ ॥ अग्नय प्रवन्सत्का नाय पाथंप्रति च स्वाहा ॥ ६ ॥
 अग्नेदीपदिवा विषा विषमहा प्रय प्रवन्सत्का नाय अ

र्ध आचमनं प्रति च स्वाहा ॥ स्नानं च प्रहाल पूजा ॥ घादमर्त
 म् ॥ घर्म वादन ॥ रुग्नि ॥ घलकाचक ॥ मरु ॥ ६ ॥ वर्कसत्त्व
 आ ॥ ६ ॥ सर्वपापदहनवजाय स्वाहा ॥ घनमकास्वचक ॥
 स्वत्वमरुतहयमृधिरुतयाय ॥ जायथाक ॥ गमाग्निम
 खवृकावत ॥ कुवर्कयवरुलपमानविशाव ॥ ६ ॥ अग्नेरु
 नि आचमनं प्रति च स्वाहा ॥ ६ ॥ अग्नेय स्वाहा ॥ घन ॥ घमाप

विकसयास्यांसमिधयविपाकशूद्रयाग॥ ॐ अकयित्वा
 हा॥ **अकयित्वा** ॥ ॐ सामायस्वाहा॥ **पनाम** ॥ ॐ वज्रांगनायस्वा
 हा॥ **खदिनमि** ॥ ॐ वर्कवृक्षायस्वाहा॥ **अणामार्ग** ॥ ॐ वर्ककव
 लायस्वाहा॥ **वनमि** ॥ ॐ वज्रयज्ञायस्वाहा॥ **इन्द्रमि** ॥ वर्क
 मनिच नायस्वाहा॥ **निकर** ॥ ॐ वाधिवृक्षायस्वाहा॥ **उगममि** ॥ ॐ वज्रवनायस्वाहा॥ **पिदार** ॥ ॐ वज्रवृक्षविष्णु

यस्वाहा॥ **पुंकरु** ॥ ॐ मधूनस्वाहा॥ **मधूनमि** ॥ ॐ असाकानायस्वा
 ज्ञायमि॥ ॐ सर्वपापप्रममनायस्वाहा॥ **वकीकमि** ॥ ॐ वर्कमहेश्व
 कानायस्वाहा॥ **अम्वलमि** ॥ ॐ सर्वकृमप्रममनायस्वाहा॥ **कद्वलि**
मि ॥ ॐ अयतिहनवजायस्वाहा॥ **कम** ॥ ॐ वज्रांगयस्वाहा॥
इवाकृषु ॥ ॐ सर्वपापदहनवजायस्वर्वपापदहस्वाहा॥ **हाम** ॥ ॐ वर्कय
 धास्वाहा॥ **अऊक** ॥ ॐ वर्कवृक्षायस्वाहा॥ **कशु** ॥ ॐ वज्रयज्ञनायस्वाहा

५

ॐ वरु विष्णु स्वाहा ॥ स्वा न वा ॐ वरु महाव नाय स्वाहा ॥ साम ॥
 स्वाहा ॥ विहिद कं ॐ वरु वा आय स्वाहा ॥ गता ॥ ॐ सर्वार्थ सिद्धी य स्वा
 ॐ का ॥ प्रका ॐ सर्वसंयुक्ति दु स्वाहा ॥ हाजा धजा ॐ आ ॥ वरु दर्भ न
 रु नाय स्वाहा ॥ कन स आदियं ॥ अन्य बादि क ल न हा क व ॥
 पञ्चपहान य जा ॥ लो न म यं म वा द न मु कि म र्थ न स वा पा क म र्म
 खलं ख द द ग म्प मा वा क उ वे य ॥ अग्नि कं पु व म ॥ ॥ धन स्वस्ति

वृ च
 वाक् न अरु इ नि वा य ॥ घं र्म वा द न ॥ मु कि ॥ य न गु वि भु द्म र्म
 सिद्धि महा क न वे ध न न म हं व न्द स र्व सिद्धि यु दा य क ॥ म क्तु ग र्म
 न ॥ धन अग्नि म र्म खलं ख न ॥ क र्म लं ख न हा य ॥ ॐ खं लु ना ह यो क
 म नं क्त्वा व द्म ना च म ना दि कं क्त्वा ॥ ला का रु व द्म ना ग्नि वि रा व ॥
 काला का ना अग्ने य धा र्म ह द्म क म ल व द्म स न य नि म लु वा धि य
 कि मा ला क्त्वा स्व स्व वि रु नि यं न चि द्म वि रु य वि ना म न म लु वा धि य कि

This image shows a close-up of a section of an ancient manuscript, likely the Voynich manuscript. The text is written in a dense, cursive script on aged, yellowish-brown parchment. The ink is dark, and the parchment shows signs of wear, including creases and discoloration. The script is highly stylized and difficult to decipher.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

18192471010

25

2715

संस्कृत

॥ श्री ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ASHA RICHIES

7

स्वाहा ॥ मवि ॥ डं वरु ॥ डं वरु ॥ स्वाहा ॥ डं ॥ डं सर्वत्रवल कलनिययूषिं
नृस्वाहा ॥ पलवु ॥ डं वरु ॥ डं सर्वत्रागय ॥ मनायस्वाहा ॥ डं
वि ॥ डं वरु ॥ मलायस्वाहा ॥ डं ॥ डं वरु ॥ मलायस्वाहा ॥ मवि ॥ मवि ॥
डं वरु ॥ कलिलरु ॥ नायस्वाहा ॥ कना ॥ डं वरु ॥ नाम्बन रुलायस्वाहा ॥
गवचग्वान ॥ ॥ धनसस्तिवाकनय ॥ धी ॥ धी ॥ धी ॥ धी ॥ धी ॥ धी ॥ धी ॥ धी ॥
धाविधमहा ॥ धयहय ॥ कयवाह ॥ नाय ॥ दानयमि ॥ ममकसा ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥

5

[illegible]

वा कुरु रथे व गाव नाम सर्वसत्त्वा सखिना गवन्तु ॥ कुरु विना गंतवद
 वयं संधर्मनसक्त ॥ हा कुरु रथे व गाव नाम
 सर्वसत्त्वा सखिना गवन्तु गवन्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 हा कुरु रथे व गाव नाम सर्वसत्त्वा सखिना गवन्तु ॥
 यद्वा कुरु रथे व गाव नाम सर्वसत्त्वा सखिना गवन्तु ॥
 यद्वा कुरु रथे व गाव नाम सर्वसत्त्वा सखिना गवन्तु ॥
 यद्वा कुरु रथे व गाव नाम सर्वसत्त्वा सखिना गवन्तु ॥

मनुजवित्तजनयाय सयं दया ॥ विमलित्तलं नित्य ॥
 ॥ निहामकर्म विधिमाफ ॥ ॥ लिखितं चालवाहनया
 वजाचार्यणी विश्वरत्ननंथयष्टकलिखापिमाशुल ॥
 धयष्टकगुनानंशारुयामदु ॥ शारुयामदु ॥ शारुयामदु ॥
 ॥ गुरु ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ गुरु ॥ ॥

साथ अकसाथ १

साथ दुग्गमनाव १६

साथ या या कक २१

साथ वा रे रे अनवी २६

साथ पोसपवति ३०

साथ वृ डी ववाति ३५

साथ साथन डावाति ४०

साथ साथन डावाति ४५

साथ साथन डावाति ५०

साथ द सां रु दि १०

साथ न कं जी ६

साथ न कं जी १५

साथ न कं जी २५

साथ न कं जी ३०

साथ न कं जी ४०

साथ न कं जी ५०

साथ न कं जी ६०

साथ न कं जी ७०

साथ न कं जी ८०

साथ न कं जी ९०

साथ न कं जी १००

साथ न कं जी ११०

साथ न कं जी १२०

साथ न कं जी १३०

पावयकपाव

७

पावद्वमद्वस

१०

पावदिमापद

१७

पाववालविम

२०

पावपावपववि

२५

पावद्वडातिम

३०

पावमापवति

३५

पावमाथमाति

४०

पावनउमपववालि॥४॥

पावदसापवा ७०

का ३

वृडा ॥ कवृडा ॥ ५

वृडा द्रमवोड १३

वृडा गिनी मूआड १६

वृडा चालवोवि २४

वृडा पावतिम ३०

वृडा वृडा वृमि ३५

वृडा साधव कालिधर

वृडा आथ मूथ कलिधर

वृडा नडा मूपं नडा ४

वृडा दसा वृमि ५०

तिमिन्नकनिमिन्न ३
तिमिद्रुमश्रुता ५
तिनिगियानता ८
तिनिकलवाड १२
तिनिपीयपड १५
तिमिद्रुताश्रथा १६
तिमिसाथन्नकविरे १
तिमिश्रथवावि २५
तिमिनतामसफाविरे

तिनिद्रुतामिस ३०

कालन्नकजीन ५
कालद्रुमश्रुता ६
कालतीजावाड १२
कालकालसोड १५
कालपायविस २०
कालद्रुताश्रवि २४
कालसाथंश्रथका २६
कालश्रुथवदुति ३२
कालनताश्रुति ३५

कालद्रुतावाति ४०

४०

कय कय क ^{श्रीगणेशाय नमः} १
 कदमादय ^{मनम} २
 कतिनिनि ^{श्रीगणेशाय नमः} ३
 ककालका ४
 कपावणाव ५
 ककुडाकुडा ६
 कसाथसाथ ७
 कआथआथ ८
 कसानडा ९
 कदसादस १०

दयप्रकदयनसि १
 दयद्रुमवाल ४
 दयतीनि कुडा ५
 दयकालआथ ६
 दयपीचदस १०
 दयकुडावाड १२
 दयसाथवाड १४
 दयआथसाद १३
 दयनडाअथ १६
 दयदसाविस २०

Handwritten text in a cuneiform script, likely Sumerian or Akkadian, on a rectangular tablet. The text is arranged in approximately 10 horizontal lines. Several characters are highlighted in red ink, possibly indicating specific words or grammatical markers. The tablet shows signs of age and wear.

Handwritten text in a cuneiform script, likely Sumerian or Akkadian, on a rectangular tablet. The text is arranged in approximately 10 horizontal lines. Several characters are highlighted in red ink, possibly indicating specific words or grammatical markers. The tablet shows signs of age and wear.